E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श

विवेक आत्रेय

एम.ए. (हिन्दी),

कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र

Paper Rcevied date

05/05/2025

Paper date Publishing Date

10/05/2025

DOI

https://doi.org/10.5281/zenodo.15595716

IMPACT FACTOR 5.924

प्रस्तावना

स्त्री-पुरुष दोनों भी समाज के अभिन्न अंग है। दोनों के बिना समाज की कल्पना भी नहीं की जा सकती। समाज रुपी रथ के यह दो पहिए हैं। अगर समाज रुपी रथ को आगे बढ़ाना हैं, तो स्त्री- पुरुष इन दोनों पहिएओं की अत्यंत आवश्यकता हैं। दोनों की स्थिति अपने शरीर के दो पैरों जैसी होनी चाहिए किंतु बिडंबना यह है कि ऐसी होती नहीं है। जीवन जीना एक कला है, जो समाज से ही सीखी जा सकती हैं। अतः समाज और साहित्य एक दूसरे के पूरक हैं उन्हें अलग नहीं किया जा सकता, क्योंकि साहित्य में समाज का रुप प्रतिबिंबित होता है। आज साहित्य जगत में सर्वाधिक चर्चा दलित-विमर्श, स्त्री-विमर्श, आदिवासी-विमर्श तथा बाजार-विमर्श इन मुद्दों पर ही रही हैं। अतः इनमें भी दलित-विमर्श और स्त्री-विमर्श पर सर्वाधिक । अतः विमर्श संकल्पना क्या है? उसे जानना जरूरी है।

विमर्श संकल्पना एवं स्वरुप :-

विमर्श संकल्पना आधुनिक काल की देन है। पिछले लगभग दो दशकों से यह संकल्पना साहित्य जगत में प्रयुक्त हो रही है। वस्तुतः विमर्श को केंद्र में रखते हुए साहित्यिक पहल के श्रीगणेश का श्रेय हंस के संपादक राजेंद्र यादवजी को देना पडेगा, क्योंकि हंस के जरिए उन्होंने स्त्री-विमर्श और दलित विमर्श जैसे विषयों को आज पूरे देशभर के

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

साहित्य जगत में चिंतन-मनन का विषय बनाया है। विमर्श का शाब्दिक अर्थ है बहस या सार्वजनिक चर्चा। 'विमर्श शब्द मूलतः गहन सोच-विचार, विचार-विनिमय तथा चिंतन-मनन को द्योतित करता है। अर्थात विमर्श से सीधा तात्पर्य सोच-विचार विनिमय तथा विवेचन से हैं। भोलानाथ तिवारी के अनुसार 'विमर्श' का अर्थ है "तबादला - ए - ख्याल राम प्रशविरा, राय- बात, विचार-विनिमय, विचार-विमर्श, सोच-विचार |

भारतीय हिन्दी साहित्य और स्त्री विमर्श :-

बौद्ध कालीन थेरीगाथा पालि में रचित 522 गाथाएं है। थेरीगाथा खुद्दक निकाय के 15 ग्रंथों में से एक है, जिसके अन्तर्गत बौद्ध भिक्षुणिओं द्वारा उनके अनुभवों और मनःस्थिति को अभिव्यक्त किया गया है। प्रव्रज्या प्राप्त स्त्रियों को थेरी कहा गया तथा उनके जीवनानुभवों द्वारा तत्कालीन स्त्री की स्थिति को गीति शैली में आत्म अभिव्यंजनात्मकता के माध्यम से जिन कविताओं में उतारा गया उन्हें गाथा कहा गया। इस प्रकार ये गाथाएं थेरी गाथाओं के नाम से प्रसिद्ध है।

इन थेरियों द्वारा आशावादी दृष्टिकोण, स्वच्छंद विचारों और स्वतंत्र वक्ता के रूप में अपने हृदय के उद्गारों को अभिव्यक्त किया। ये परिव्राजिकाएं स्त्री स्वतंत्रता की प्रारम्भिक वक्ता थी। इसी क्रम में आठवीं शताब्दी में दक्षिण से जो भक्ति की धारा आलवार संतों द्वारा प्रवाहित की गई उन्हीं 12 आलवार संतों में एक मात्र महिला संत आंदाल थी। जिन्होंने नारी जाति को आध्यात्मिक भक्ति की ओर अग्रसर करने का कार्य किया ।

बारहवीं शताब्दी में कर्नाटक की कन्नड़ कवयित्री अक्का महादेवी पुरुष सत्ता के खिलाफ आवाज बुलन्द करती हुई शिव भक्ति की ओर अग्रसर हुई। उनके द्वारा पति के किए अत्याचारों का विरोध कर, स्त्री की परतंत्रता, उसके अस्तित्व की खोज हेतु विद्रोह किया गया। इन्होंने कन्नड़ कविता में 430 वचन कहें, जो कन्नड़ साहित्य में विशिष्ट स्थान रखते है। मराठी संत मुक्ताबाई अद्वैत और योगमार्ग की ज्ञाता थी । ज्ञान और भक्ति का उनमें उच्च कोटी की थी।

स्त्री पुरुष और व्यक्तिभेद की भावना को वे सांसारिक मानती थी ज्ञान और भक्ति में इस भेद को नकारती है। मराठी साहित्य में इनकी उलटबासियां प्रमुख है। जनाबाई शूद्र जाति की भक्त कवयित्री थी, जिनकी बानी को अभंग कहा जाता है। इन अभंगों में स्त्री की उपेक्षित छवि को दूर करने और आत्मानुभूति का स्वर देखने को मिलता है। सोलहवीं शताब्दी में मीराबाई पुरुष प्रधान समाज की परंपराओं की बेडियों को तोड़कर भगवद् भक्ति और प्रेम में मग्न रही। स्त्री की स्वतंत्रता और अस्तित्व की लड़ाई में मीरा तत्कालीन समाज की संकीर्ण अव्यवस्था और पुरुष शक्ति के विरोध में अकेली संघर्षरत खड़ी रही। सन् 1882 में ताराबाई शिंदे द्वारा मराठी में 'स्त्री पुरुष तुलना' लिखकर पुरुष सत्ता के विरोध में अपनी आवाज उठाई। इसी समय पंडिता रमाबाई ने स्त्री धर्म नीति लिखकर स्त्री को चौतन्य रहने के लिए तटस्थ किया और साथ स्त्री जीवन के यथार्थ को जानने का प्रयत्न भी किया।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

सन् 1882 में नारी चेतना को मुखरित करती और स्त्री स्वतंत्रता पर अपना पक्ष रखती हुई पुस्तक 'सीमंतनी उपदेश आई। इस पर किसी लेखिका का नाम न होने पर धर्मवीर भारती द्वारा सन् 1984 में इसका संपादन किया गया और लेखिका का नाम अज्ञात हिन्दू औरत माना गया। स्त्री की परतंत्रता, शोषण और पीड़ा को यथार्थ और अनुभवों के आधार पर इस पुस्तक में प्रस्तुत किया है। 29 अध्यायों में विभक्त यह पुस्तक आक्रामक शैली में रचित है। जिसमें स्त्री जीवन की यथार्थ कट्टरताओं की जड़ों को पोषित करने वाली और कुरीतियों के पत्तों का सृजन करने वाली ज्वलंत एवं विवादास्पद समस्याओं को बेबाक तरीके से उठाया गया। यह पुस्तक तत्कालीन परिस्थितियों में नारीवाद का प्रतिनिधित्य करते हुए खोखलें समाज की दिखावटी परम्पराओं की इमारत को हिलाने के लिए काफी थी।

स्त्री सशक्तिकरण और नारी जागरण हेतु ये स्त्रियों को कहती है- 'जब तक अपने ऊपर रहम न करोगी मुमकिन नहीं कि हिन्दुस्तानी तुम पर रहम करें। हमेशा इसी कैद में रही हो और रहोगी। अगर परमेश्वर भी तुम्हारी इस हालात पर रहम कर छुड़ाने आवें हरगिज न छुड़ा सकेगा, जब तक तुम खुद अपने जिस्म से मुरव्वत न करोगी। सन् 1882 के पश्चात् भारतीय हिन्दी साहित्य में 1942 तक एक दीर्घ मौन छाया रहा।

सन् 1942 को इस खामोशी को तोडती हुई महादेवी वर्मा की पुस्तक श्रृंखला की कड़ियाँ आई जिसे स्त्री विमर्श की प्रस्तावना कहा जा सकता है। इस पुस्तक में महादेवी वर्मा स्त्री मुक्ति हेतु ऐसी कामना करती है जो न तो पुरुष का अनुसरण करें न ही पुरुष बनने का प्रयास करें। महादेवी वर्मा ने 'श्रृंखला की कड़ियाँ में स्त्री को समानता का न्याय, अस्तित्व की खोज और परम्परागत बंधनों से मुक्त करने का प्रयास किया है। महादेवी जी ने अपनी सभी रचनाएं उनके आत्मानुभवों के आधार पर लिखी है। इस हेतु स्त्री मन के उनके उद्‌गार साहित्य में परिलक्षित होना सामान्य है। संघर्षशील स्त्री की कथा को उन्होंने अपने रेखाचित्रों के माध्यम से बुना है । पुरुष की स्वतंत्रता और स्त्री की परतंत्रता को दे स्वीकार नहीं करती है और समाज के हाशिए पर खड़ी स्त्री के लिए उनकी लेखनी मौन संघर्ष प्रारम्भ कर देती है।

सीमन्तनी उपदेश से लेकर श्रृंखला की कड़ियों तक स्त्री विमर्श की ठोस अभिव्यक्ति प्रस्तुत करने वाली कोई अन्य पुस्तक नहीं मिलती। इस बीच सुभद्रा कुमारी चौहान की स्त्री ओजस्विता से पूरित कविता साहित्य में आई। इनके तीन कहानी संग्रह बिखरे मोती (सन् 1932), उन्मादिनी (सन् 1934) और सीधे-साधे चित्र (सन् 1947) में प्रकाशित हुए, जिनकी अधिकतर कहानियों नारी विमर्श पर आधारित थी। जिनके स्त्री पात्र तत्कालीन स्त्री जीवन के यथार्थ को प्रस्तुत करते थे।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

निष्कर्ष :-

हिन्दी साहित्य ने नारी जीवन की अनेक बातों को ईमानदारी से चित्रित किया है. साहित्यकारों ने ने स्त्री जीवन को बदलते परिवेश में उसकी बदलती चेतना के साथ अपनी रचनाओं में स्थान दिया है. समकालीन महिला लेखिकाओं ने नारी मन की ग्रंथियों को बडी ईमानदारी से खोला है और यह दिखाया है कि वे अब जाग चुकी है वे किसी भी हालत में अपने हक से पीछे रहने वाली नहीं है।

संदर्भ सूची :-

1. **डॉ. हरदेव बाहरी हिंदी शब्दकोश**, **राजपाल एड सन्ज**, **नई दिल्ली**, 2015, **पृ**. 761
2. **रोहिणी अग्रवाल**, **साहित्य की जमीन और स्त्री मन के उच्छवारा**, **वाणी प्रकाशन**, **नई दिल्ली**, 2014 **पृ**. 11
3. **अभयकुमार दुबे**, **आधुनिकता के आईने में दलित**, **वाणी प्रकाशन**, **नई दिल्ली**. 2014 **पृ**. 413
4. **रोहिणी अग्रवाल**, **साहित्य की जमीन और स्त्री मन के उच्छवास**, **वाणी प्रकाशन**, **नई दिल्ली**, 2014 **पृ**. 11
5. **महादेवी वर्मा**, **श्रृंखला की कडिया**, **लोकभारती प्रकाशन**, **इलाहबाद** 2001.22